खंड-V

उपखंड-I : द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् यूरोप

इस टॉपिक का अध्ययन करते हुए निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर गौर करना आवश्यक होगा–

- द्वितीय विश्वयुद्ध को विश्व इतिहास में विभाजक रेखा क्यों माना जाता है?
- यूरोपीय प्रभुता के अंत ने विश्व इतिहास पर क्या प्रभाव डाला?
- द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य पश्चिमी देशों तथा सोवियत रूस के बीच मतभेद के क्या बिंदु थे?
- शीतयुद्ध पहले के युद्ध से किस रूप में भिन्न था?
- पूंजीवादी मॉडल को बचाने के लिये पश्चिमी देशों ने क्या कदम उठाए?

उपखंड-II : विश्वयुद्धोत्तर विश्व की दशा एवं दिशा

इस उपखंड के माध्यम से आप जानेंगे–

- विश्व की सबसे बड़ी क्रांति 'उपनिवेश मुक्ति' किस प्रकार घटित हुई?
- अलग-अलग क्षेत्रों में उपनिवेश मुक्ति की प्रक्रिया किस प्रकार पृथक् रही?
- तृतीय विश्व की संकल्पना क्या है तथा किस प्रकार शीतयुद्ध का तृतीय विश्व में विस्तार हुआ?
- तृतीय विश्व के देशों के समक्ष क्या चुनौतियाँ थीं? उन्होंने किस प्रकार इन्हें सुलझाने का प्रयास किया?

-मणिकांत सिंह

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

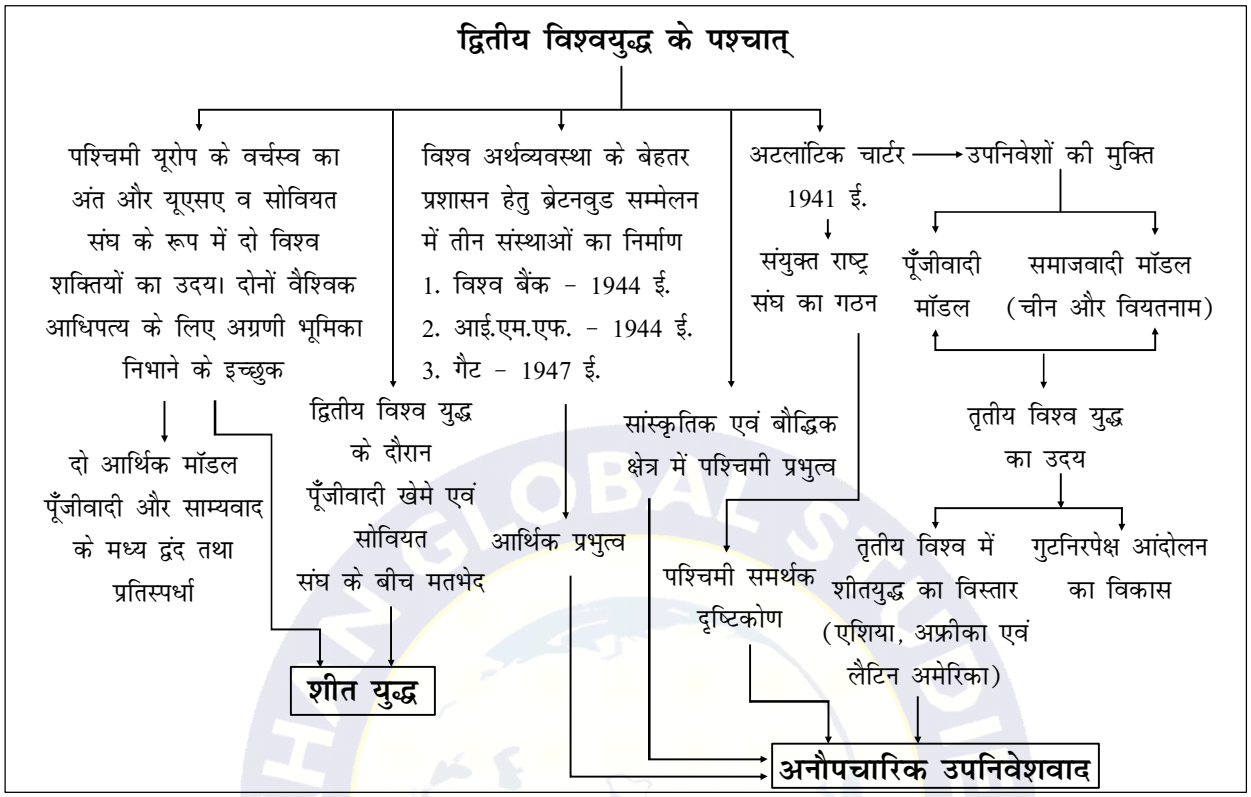

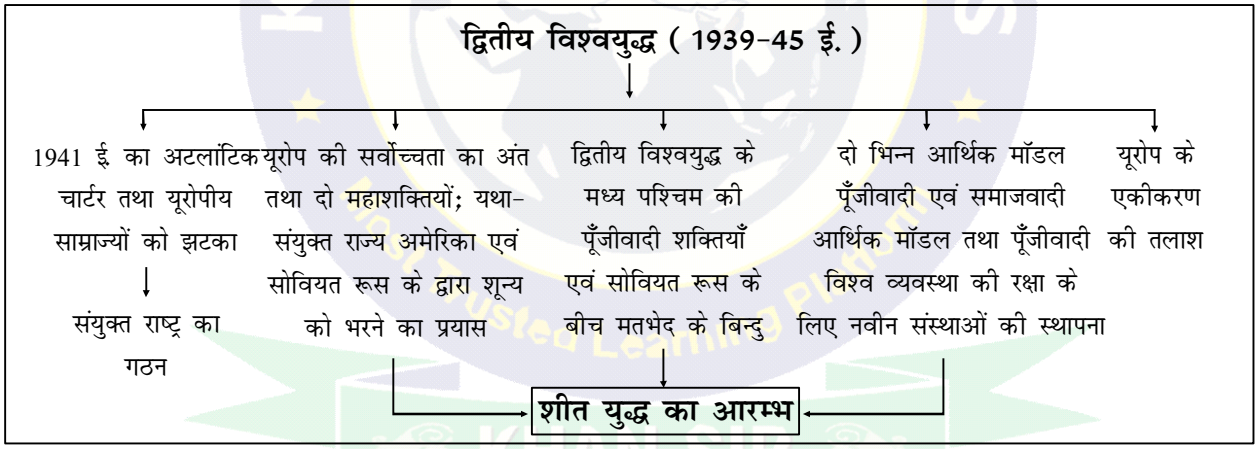

■ **पृष्ठभूमि:**

- द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर यूरोप केंद्रित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था, जो पिछले पाँच सौ वर्षों से अस्तित्व में थी, लुप्त हो गई तथा महाद्वीपीय आकार लिए हुए दो महाशक्तियाँ अस्तित्व में आयीं- संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत रूस। इन्होंने क्रमशः पूँजीवादी तथा समाजवादी गुट का नेतृत्व किया तथा बाकी शक्तियाँ एक अथवा दूसरे गुट के वर्चस्व को मानने के लिए तैयार थीं, वहीं कुछ नव स्वतंत्र राष्ट्रों ने इन दोनों गुटों से पृथक होकर गुट निरपेक्ष आन्दोलन को संगठित करने का प्रयास किया। फिर इन दोनों महाशक्तियों ने अपनी जरूरत तथा दृष्टिकोण के अनुकूल नयी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना पर बल देना आरम्भ किया। उपर्युक्त दोनों महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्द्धा द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य ही आरम्भ हुई।
- यह सही है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य दोनों शक्तियों के बीच एक असामान्य गठबंधन कायम हो गया। इसकी वजह थी- धुरी शक्ति के रूप में एक समान शत्रु का होना। जून, 1941 में सोवियत रूस पर जर्मन आक्रमण के पश्चात् ब्रिटेन युद्ध में प्रविष्ट हो गया। उसी प्रकार, दिसम्बर, 1941 में पर्लहार्बर पर द्रुत जापानी आक्रमण ने संयुक्त राज्य अमेरिका को भी द्वितीय विश्वयुद्ध में खींच लिया। फिर ऐसा लगने लगा था कि विश्व की दो महाशक्तियों के सहयोग के आधार पर एक नयी विश्व व्यवस्था स्थापित हो सकेगी। राष्ट्र संघ की स्थापना के

माध्यम से इस सहयोग को एक संस्थागत आधार देने का भी प्रयास किया गया। किन्तु युद्ध के मध्य ही कुछ ऐसे विवादास्पद मुद्दे उभरकर आए, जिसके परिणामस्वरूप उपर्युक्त दोनों शक्तियों के बीच दूरियाँ बढ़ती गईं और फिर इसने एक विशिष्ट प्रकार के युद्ध का रूप ले लिया, जो आगामी चार दशकों तक चलता रहा। इसकी पहचान शीत युद्ध के रूप में हुई। यह युद्ध अपने स्वरूप में पिछले युद्धों से अलग था। इसे **शीतयुद्ध** के साथ-साथ गर्म शांति (Hot Peace) की भी संज्ञा दी जाती है। वस्तुतः यह एक मनोवैज्ञानिक अथवा कूटनीतिक युद्ध था, जिसका उद्देश्य था- एक गुट के द्वारा दूसरे गुट के प्रभाव को सीमित करना।

■ **उन कारकों की व्याख्या कीजिए जिनके परिणामस्वरूप द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य पूँजीवादी देश और सोवियत रूस के बीच मतभेद हो गए-**

- शीत युद्ध के विषय में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि वैचारिक मतभेद के बाद भी द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य पश्चिम के पूँजीपति देश, सोवियत रूस के साथ मिलकर फासीवादी शक्तियों का सामना कर रहे थे, परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य ही कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिसके कारण द्वितीय विश्वयुद्ध के काल के मित्र, युद्ध की समाप्ति पर मित्र नहीं गये। ये घटनाएँ निम्नलिखित थीं-

1. **1943 में इटली के समर्पण का मुद्दा:-** 1943 में इटली में मुसोलिनी के पतन के पश्चात् इटली ने समर्पण कर दिया। इटली के समर्पण पर सोवियत रूस को यह उम्मीद थी कि उसे भी मित्र राष्ट्र वार्ता में शामिल करेंगे, किन्तु ब्रिटेन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका ने आपस में मिलकर इटली के साथ शर्तें तय कर लीं। इस विषय में सोवियत रूस को कोई सूचना नहीं दी गई। अतः सोवियत रूस आहत हुआ।
2. **युद्ध में दूसरे मोर्चे खोले जाने का मुद्दा:-** जर्मन आक्रमण के कारण सोवियत रूस को काफी क्षति हो रही थी। इसलिए स्टालिन के द्वारा यह सुझाव दिया गया कि ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस की सीमा पर एक दूसरा मोर्चा खोल दें, जिससे कि जर्मनी की शक्ति बँट जाए। परंतु मित्र राष्ट्रों ने दूसरा मोर्चा खोलने में काफी विलम्ब कर दिया।
3. **सोवियत रूस के द्वारा पूर्वी यूरोप के देशों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया जाना:-** जर्मनी को पीछे हटाते हुए सोवियत रूस ने पूर्वी यूरोप के देश; यथा- पोलैंड, हंगरी, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया, अल्बानिया, रूमानिया तथा जर्मनी के पूर्वी भाग पर कब्जा कर लिया। आगे इन क्षेत्रों में सोवियत रूस ने ऊपर से साम्यवादी सरकारें स्थापित कर दीं। इस कारण पश्चिम के पूँजीवादी देश चिंतित हो गए।
4. **जापानी शहर हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमला:-** संयुक्त राज्य अमेरिका ने सोवियत रूस को अपने विश्वास में लिए बिना जापान पर अगस्त, 1945 में परमाणु हथियार का प्रयोग कर दिया। स्टालिन को इस बात पर आपत्ति थी कि सहयोगी होने के बाद भी इतना बड़ा कदम उठाने से पहले सोवियत रूस को विश्वास में नहीं लिया गया। सोवियत रूस ने इसे रूसी साम्यवाद के विरुद्ध अमेरिकी चेतावनी के रूप में देखा।

- **अभ्यास प्रश्न:-** *'कहा जाता है कि द्वितीय विश्व युद्ध में मिलकर लड़ने वाले मित्र राष्ट्र, युद्ध के पश्चात् मित्र नहीं रह गए।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में शीत युद्ध को प्रेरित करने वाले कारकों का परीक्षण कीजिए।*

■ **समाजवादी मॉडल की चुनौती को देखते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका ने पूँजीवाद के प्रोत्साहन के लिए कौन-सी रणनीति अपनायी?**

- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था- एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में ब्रिटेन का पतन और नवीन आर्थिक महाशक्ति के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका की ताजपोशी। किंतु द्वितीय विश्व युद्ध ने उपनिवेश मुक्ति की प्रक्रिया को भी प्रोत्साहन दिया था, इसलिए एक प्रश्न उपस्थित हुआ कि विश्व युद्धोत्तर काल में अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का संचालन कैसे होगा?
- यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण था कि संपूर्ण 19वीं सदी में विश्व अर्थव्यवस्था का संचालन दो कारकों के कारण हुआ था। प्रथम, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नियमों का निर्धारण साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा किया गया था। द्वितीय, स्वर्ण मानक के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का संचालन होता था। परंतु अब दो महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके थे। प्रथम, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का प्रजातांत्रीकरण हो रहा था, इसलिए अब अर्थव्यवस्था पर साम्राज्यवादी शक्तियों का प्रत्यक्ष नियंत्रण टूट रहा था। दूसरे, प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् स्वर्ण मानक पर आधारित मुद्रा व्यवस्था लगभग ध्वस्त हो गई थी।
- उपर्युक्त कारकों को देखते हुए नवीन आर्थिक एवं वित्तीय संगठनों का निर्माण आवश्यक था। अतः 1944 ई. में ब्रेटनवुड नामक स्थान पर बैठक हुई। इस बैठक में ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड केन्स एवं अमेरिकी अर्थशास्त्री हैरी डेक्स्टर ह्वाईट ने हिस्सा लिया। इस बैठक में दो प्रमुख बहुराष्ट्रीय निगम अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) तथा विश्व बैंक का गठन किया गया। इसलिए इन्हें 'ब्रेटनवुड की जुड़वा संतानें' कहते हैं।

1. **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष:** इसकी स्थापना 1944 ई. में हुई तथा इसका उद्देश्य था डॉलर के साथ अन्य देशों की मुद्राओं का समायोजन, ताकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का संचालन हो सके। इस प्रकार, स्वर्ण मानक के पतन से जो समस्या उत्पन्न हुई थी, वह दूर हो जाती। साथ ही, वह व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन से ग्रस्त देश को आर्थिक सहायता भी प्रदान करता। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अध्यक्ष के पद पर किसी यूरोपीय व्यक्ति की नियुक्ति निश्चित हुई।
2. **विश्व बैंक:** 1944 ई. में स्थापित यह ब्रेटनवुड की दूसरी संतान थी। इसका उद्देश्य था तृतीय विश्व में आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्य पूरा करना। इसके लिए यह किसी तीसरी पार्टी के रूप में गारंटी देकर किसी भी राष्ट्र से किसी अन्य राष्ट्र को ऋण उपलब्ध करवाता। (यह काम पहले साम्राज्यवादी शक्तियाँ करती थीं।) इसका मुख्यालय भी संयुक्त राज्य अमेरिका में ही था तथा इसके अध्यक्ष की नियुक्ति यूएसए के द्वारा ही निर्धारित की जाती थी।
3. **गैट (GATT, General Agreement on Tariff and Trade):** इस संस्था का गठन 1947 ई. में हुआ। विश्व आर्थिक मंदी से सबक लेकर अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा व्यापार के संचालन के लिए इस संस्था को आवश्यक माना गया। मंदी से उत्पन्न व्यापार युद्ध (Trade War) और मुद्रा युद्ध (Currency War) को रोकने के लिए यह संस्था गठित हुई। अगर गहराई से देखा जाए, तो इस संस्था के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका ने ब्रिटिश कॉमनवेल्थ का विकल्प खोजने का प्रयास किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के जोर पर GATT में MFN- Most Favoured Nation का प्रावधान लाया गया और इसके आधार पर किसी एक देश को दी गई रियायत स्वाभाविक रूप से दूसरे देश को प्राप्त हो जाती।

- **सकारात्मक योगदान:**- इन संस्थाओं की स्थापना में ब्रिटिश अर्थशास्त्री जे. एम. केन्स तथा अमेरिकी अर्थशास्त्री हैरी डेक्स्टर ह्वाईट की महत्वपूर्ण की भूमिका थी। केन्स का नजरिया काफी व्यावहारिक था। इसलिए उसने अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के संचालन और किसी राष्ट्र विशेष के आर्थिक हित के बीच संतुलन स्थापित किया अर्थात् प्रत्येक सरकार को खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने, अंतर्राष्ट्रीय निर्यात से अपनी अर्थव्यवस्था की सुरक्षा करने तथा अपनी जनता के लिए लोक कल्याणकारी कार्य चलाने का अधिकार दिया। उसका मानना था कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए सरकार की भूमिका आवश्यक होगी और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नियमों के संचालन के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा किसी राष्ट्र विशेष की अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन आवश्यक होगा। इस प्रकार, उसने सीमित भूमंडलीकरण (Limited Globalisation) पर बल दिया। (वर्तमान भूमंडलीकरण ने केन्स के इस संतुलन की नीति को अस्वीकार कर दिया है।)
- इन संस्थाओं के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का संचालन सुचारु रुप से संभव हुआ। 1950–70 तक के दो दशक पूँजीवाद के लिए स्वर्ण युग साबित हुए तथा विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की प्रगति होती रही। किंतु 1970 के दशक के तेल संकट ने स्थिति में नाटकीय परिवर्तन ला दिया।

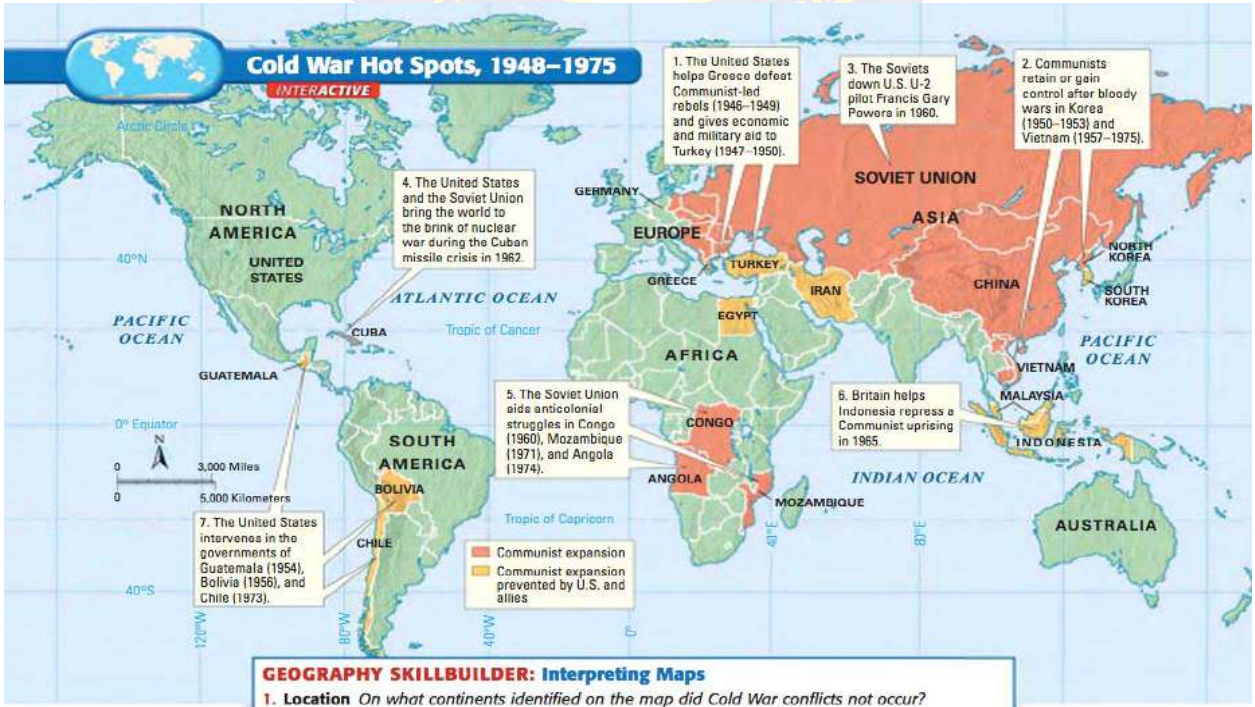

- **सीमाएँ:**- ये संस्थाएँ नव-उपनिवेशवाद के सबल माध्यम सिद्ध हुईं। समाजवादी मॉडल के खतरे को देखते हुए ये संस्थाएँ विश्व में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विस्तार का माध्यम बनीं। फिर इनके माध्यम से राजनीतिक नियंत्रण होने के बाद भी तृतीय विश्व की अर्थव्यवस्था पर पश्चिम के पूँजीवादी देशों का नियंत्रण बना रहा।

■ **यूरोप में शीत युद्ध का विस्तार:**

1. **ट्रूमैन सिद्धांत की घोषणा (मार्च, 1947)**- युद्ध के बाद ब्रिटेन यूनान से हट गया, इसलिये यूनान और तुर्की की सुरक्षा एक बड़ा मुद्दा बन गई। इनकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अब संयुक्त राज्य अमेरिका के सिर पर आ गई। अत: साम्यवाद के प्रसार के खतरे को देखते हुए ट्रूमैन के नेतृत्व में संयुक्त राज्य अमेरिका ने भूमध्यसागरीय क्षेत्र में अपना छठा नौसैनिक बेड़ा स्थापित किया। उसी समय उसने अपनी यह प्रसिद्ध उद्घोषणा लायी कि सशक्त अल्पसंख्यकों के विरुद्ध शांति के लिए संघर्ष करने वाले लोगों के पक्ष में हम शीत युद्ध की घोषणा करते हैं।
2. **जून, 1947 में यूरोप के लिए मार्शल योजना**- इस योजना के तहत यूरोप को आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए 13 बिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता दिए जाने का प्रावधान था। इसी योजना के कारण यूरोप का पश्चिम के पूँजीवादी देशों और पूर्वी यूरोप के समाजवादी देशों के बीच औपचारिक रूप में आर्थिक विभाजन हुआ।
3. **ब्रुसेल्स संगठन (मार्च, 1948)**- जब पश्चिमी यूरोपीय देशों के दबाव के बावजूद भी सोवियत रूस के द्वारा चेकोस्लोवाकिया में ऊपर से साम्यवादी सरकार को आरोपित कर दिया गया, तो प्रतिक्रिया में ब्रिटेन के नेतृत्व में पश्चिमी यूरोप के 6 देशों ने मिलकर ब्रुसेल्स संगठन का निर्माण किया।
4. **बर्लिन की घेराबंदी और नाटो (NATO) का गठन**- ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका को यह विश्वास दिलाने का प्रयास कर रहा था कि सोवियत रूस का रुख आक्रामक है, इसलिये संयुक्त राज्य अमेरिका को आगे आना चाहिये। परंतु संयुक्त राज्य अमेरिका को इस बात पर विश्वास नहीं था, किंतु जब सोवियत रूस ने बर्लिन में नाकेबंदी करके पश्चिमी देशों का रास्ता रोकना चाहा, तो फिर संयुक्त राज्य अमेरिका को विश्वास हो गया कि सोवियत रूस का रुख आक्रामक है और उसने फिर 1949 में आरंभ में 12 देशों के साथ मिलकर नाटो का गठन किया। 1952 ई. तक उसकी संख्या बढ़कर 52 हो गई।
5. **वार्सा पैक्ट (1955 ई.)**- 1955 ई. में पश्चिमी जर्मनी को परमाणु हथियारों से सुसज्जित किए जाने की प्रतिक्रिया में सोवियत रूस की पहल पर पूर्वी यूरोप के समाजवादी देशों ने मिलकर वार्सा पैक्ट का गठन किया।

■ **1941 ई. के अटलांटिक चार्टर के उद्देश्य एवं वास्तविकता:**

- द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य युद्ध में शामिल होने के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल के साथ अटलांटिक महासागर में एक जहाज पर बैठकर एक प्रपत्र पर हस्ताक्षर किया। इसे 'अटलांटिक चार्टर' के नाम से जाना गया। इसमें निम्नलिखित प्रावधान थे-

1. इसका घोषित उद्देश्य था- उपनिवेश के लोगों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना। इसमें यह प्रावधान था कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों अर्थात् औपनिवेशिक विश्व के लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार मिलेगा। निश्चय ही यह घोषणा विल्सन की 14-सूत्रीय माँग से काफी आगे थी जिसने केवल यूरोप के अल्पसंख्यक समूहों के लिए आत्मनिर्णय की बात कही थी।
2. ऐसा महसूस किया गया कि सैनिक टकराहट का एक महत्वपूर्ण कारण होता है आर्थिक हितों में टकराहट और इसके कारण दो विश्व युद्ध हुए थे। इसलिए अटलांटिक चार्टर ने यह आश्वासन दिया कि सभी राष्ट्रों की अंतर्राष्ट्रीय बाजार और कच्चे माल तक पहुंच हो।
3. इसने विश्व में स्थायी शांति बनाए रखने के लिए एक संस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की। यह संस्था 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के नाम से जानी गई।

- **वास्तविकता:**

1. अटलांटिक चार्टर का वास्तविक उद्देश्य था- नव स्वतंत्र एशियाई-अफ्रीकी देशों में अमेरिकी बाजार का विस्तार करना। अगर गौर से देखा जाए, तो यह ज्ञात होता है कि अटलांटिक चार्टर के माध्यम से और उपनिवेश मुक्ति पर बल देकर संयुक्त राज्य अमेरिका अपने बाजार को प्राप्त करने तथा कच्चे माल तक पहुँच बनाने का प्रयास कर रहा था।
2. अटलांटिक चार्टर वैश्विक स्तर पर स्वतंत्रता और प्रजातंत्र को फैलाने का आश्वासन दे रहा था, परंतु वास्तविकता में तब इसका उल्लंघन हुआ जब शीतयुद्ध का विस्तार हुआ। शीतयुद्ध में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने अटलांटिक चार्टर के एजेंडे को दरकिनार कर दिया।

प्रश्नः- 'शीतयुद्ध ने अटलांटिक चार्टर को निष्प्रभावी बना दिया।' इस कथन पर प्रकाश डालिए।

(प्रश्न विश्लेषणः- यह प्रश्न भी अपने स्वरूप में 'Hypothetical' है। यथा- 'शीतयुद्ध' 'अटलांटिक चार्टर', 'निष्प्रभावी'। इस वक्तव्य को सिद्ध करना है।)

उत्तरः- 1941 के अटलांटिक चार्टर के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था (World order) की रूपरेखा प्रस्तुत की थी। अटलांटिक चार्टर में विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों को आत्मनिर्णय (स्वतंत्रता) के अधिकार का आश्वासन निहित था। अटलांटिक चार्टर निश्चय ही विल्सन के 14 सूत्रीय कार्यक्रम का अगला कदम था क्योंकि चौदह सूत्रीय कार्यक्रम केवल यूरोप के संदर्भ में था, तो अटलांटिक चार्टर का वैश्विक संदर्भ था। अटलांटिक चार्टर को उपनिवेश मुक्ति का एजेंडा माना गया। यह उम्मीद की गई कि अटलांटिक चार्टर अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का प्रजातांत्रीकरण करेगा तथा यू.एस.ए. इस नवीन विश्व व्यवस्था का सूत्रधार बनेगा।

परन्तु शीतयुद्ध ने विश्व राजनीति की दिशा ही बदल दी तथा इसके परिणामस्वरूप यू.एस.ए. की नीति एक अन्तर्विरोध का शिकार हो गई। यह अन्तर्विरोध था स्वतंत्रता के समर्थन एवं समाजवादी दल के नेतृत्व के विरोध का अन्तर्विरोध। दूसरे शब्दों में, अगर स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व उदारवादी-पूँजीवादी दल के हाथों में होता, तो संयुक्त राज्य अमेरिका का समर्थन प्राप्त हो जाता, परन्तु अगर नेतृत्व समाजवादी दल के द्वारा किया जाता, जैसाकि चीन एवं वियतनाम में देखने को मिलता है, तो यू.एस.ए. विरोध पर उतारू हो जाता।

उपर्युक्त तथ्य के आधार पर हम ऐसा कह सकते हैं कि शीतयुद्ध ने अटलांटिक चार्टर को निष्प्रभावी बना दिया।

■ यूरोप का एकीकरण

- एक तरफ जहाँ यूरोप, पश्चिमी एवं पूर्वी यूरोप के रूप में विभाजित हुआ, वहीं दूसरी तरफ पश्चिमी यूरोप के देशों के बीच एकीकरण और संगठन को भी बल मिला। (1990 के दशक के पश्चात् ही एकीकरण का विस्तार पूर्वी यूरोप तक हो सका।)
- **यूरोप के एकीकरण को प्रेरित करने वाले कारकः**

1. यूरोपीय नेताओं और बुद्धिजीवियों को यह अहसास हो चुका था कि यूरोप की प्रत्येक पीढ़ी को एक भयंकर युद्ध का सामना करना पड़ रहा था। यह युद्ध तभी समाप्त किया जा सकता था जब यूरोप का एकीकरण होता। एकीकरण के पक्ष में सामान्य जनता के बीच जागृति लाने की जरूरत थी।
2. फ्रांस को यह अहसास था कि एकीकरण के पश्चात् जर्मनी के साथ उसके संघर्ष का मुद्दा समाप्त हो जाएगा।
3. फ्रांस व कुछ अन्य देशों को यह विश्वास था कि एकीकरण की स्थिति में यूरोप पर दोनों महाशक्तियों का प्रभाव सीमित करना संभव होगा।
4. जर्मनी (पश्चिमी जर्मनी) के लिए भी यह आवश्यक था। इस कारण यूरोपीय राष्ट्रों के समुदाय में शामिल होना उसके लिए आसान था।
5. यूरोप के एकीकरण की स्थिति में विश्वयुद्धोत्तर आर्थिक पुनर्निर्माण आसान था।

- **एकीकरण का मॉडल**

i. संयुक्त राज्य अमेरिका की तरह विभिन्न राष्ट्रों का संगठित संघ।
ii. संयुक्त राष्ट्र संघ की तरह विभिन्न राष्ट्रों का एक ढीला-ढाला संघ।

■ यूरोपीय आर्थिक समुदाय (1958 ई.)

- प्रथम मॉडल के पक्ष में सहमति नहीं बन सकी, इसलिए विभिन्न राष्ट्रों का एक ढीला-ढाला संघ बना जिसमें मुख्यतः एक-दूसरे के लिए बाजार खोलने पर बल दिया गया। 1957 में रोम की संधि के आधार पर 1958 में यूरोपीय आर्थिक समुदाय का गठन हुआ। इसमें आरंभ में 6 देश शामिल थे; यथा- फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड तथा बेल्जियम। इसके निम्नलिखित प्रमुख अंग थे-

i. यूरोपीय संसद
ii. यूरोपीय मंत्रिपरिषद्
iii. यूरोपीय न्यायालय
iv. सचिवालय
v. यूरेटम (Euratom) - सदस्य देशों का सामूहिक परमाणु कार्यक्रम

■ यूरोपीय समुदाय

- 1967 में आर्थिक एकीकरण की दिशा में और भी अधिक प्रयत्न किया गया तथा इस क्रम में यूरोपीय आर्थिक समुदाय की जगह यूरोपीय समुदाय का गठन किया गया। इसके अंतर्गत यूरोपीय आर्थिक समुदाय, यूरोपीय कोयला और लौह आयोग एवं यूरेटम तीनों को मिलाकर संगठन बनाने का प्रयास किया गया।

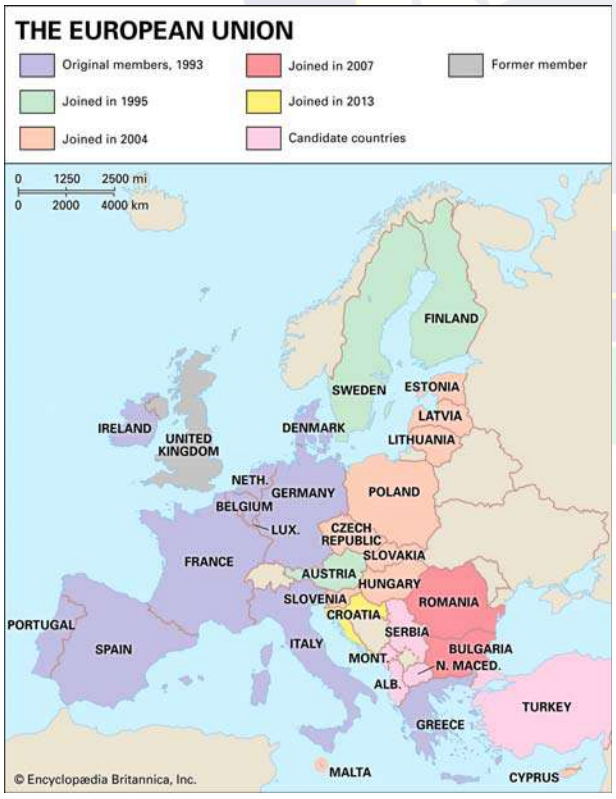

- **ब्रिटेन की प्रतिक्रिया**– आरंभ में ब्रिटेन इस संस्था में शामिल होने के लिए इच्छुक नहीं था, बल्कि सात अन्य देशों के साथ मिलकर उसके द्वारा इफ्टा (European Free Trade Association, EFTA) का गठन किया गया। ब्रिटेन के यूरोपीय समुदाय में शामिल न होने के दो कारण थे–
  i. उसे यूरोपीय बाजार की तुलना में कॉमनवेल्थ के बाजार में अधिक विश्वास था।
  ii. उसका मानना था कि इस संगठन में शामिल होने पर संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ उसका संबंध कमजोर हो जाएगा।
- परंतु फ्रांस और जर्मनी की अर्थव्यवस्था का तीव्रता से विस्तार तथा दूसरी तरफ ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में गिरावट के पश्चात् उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। फिर उसके द्वारा संस्था में शामिल होने का निरंतर प्रयास किया गया, परंतु अब फ्रांस के द्वारा उसके निर्णय पर वीटो लगाया गया। अंत में, 1973 में वह इस संस्था में शामिल होने में सफल रहा।

■■■